

कषायों को मंद करने की आव-यकता: आचार्यश्री महाश्रमण  
ढेलाणा गांव में प्रवचन, आचार्यश्री ने ग्रामीणों को दिलाया न-ना नहीं करने का  
संकल्प

आमेट: 3 फरवरी

तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारहवें अधि-नास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने मनुश्य के मन में व्याप्त होने वाले कषायों को मंद करने का आह्वान करते हुए कहा कि इस पर विजय पाना भी एक तरह से साधना है। आदमी जितना विकृतियों से दूर रहने का प्रयास करेगा उतनी ही उसकी धार्मिक भावना पुष्ट होगी। इस पर नियंत्रण हो जाता है तो व्यक्ति को आत्मा की अनुभूति का अहसास होता है। आचार्यश्री ने उक्त विचार आमेट से सात किलोमीटर दूर स्थित ढेलाणा गांव में शुक्रवार को जैन :वेताम्बर तेरापंथी सभा की ओर से आयोजित धर्म सभा में श्रावक-श्राविकाओं को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने मनुश्य से स्वयं का आचरण विनम्र और करुणा-नील बनाने का आह्वान करते हुए कहा कि जैसा हमारा चित होगा वैसी ही भावना हमारे मन में विद्यमान रहेगी। इसलिए चित को धार्मिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि मन विकारों से ग्रसित न हो। पाप कर्म करने की ओर ध्यान आकृष्ट न हो। हमारी वाणी में जो बात हो वही आचरण में भी नजर आए। एकता का रूप हो। इसकी कमी से व्यवहार में कुटिलता, झूठ, कपट की स्थिति बन सकती है। हमें इस तरह के व्यवहार से बचना चाहिए। किसी का भाव, भावना शुद्ध है तो उसे अगली गति में अन्य स्थिति प्राप्त होती हैं। गलत बातों को मन में स्थान न दें। उन्होंने कहा कि गलत राह पर जाने वाले व्यक्ति को सदाचार के मार्ग पर ले जाना भी एक सेवा है। दुखी का दुख दूर करने और उसे सहारा देने का प्रयास सामाजिक सेवा हैं। स्वयं के जीवन में स्वार्थ का बोध आने से रोके और परमार्थ की ओर जीवन को ले जाने के उपायों को अपनाने का श्रम करें। साथ ही परमार्थ की चेतना आत्म कल्याण के लिए हो। इसके लिए प्रयास करने की जरूरत है।

आचार्यश्री ने कहा कि व्यक्ति सुखाकांक्षी होता है और भौतिक सुखों की कामना करता है। शरीर सुखानुभूति का साधन है तो व्याधियों का घर भी है। जिस व्यक्ति का उठना निश्चित है दिनचर्या निश्चित है। उसका शरीर स्वाध्याय रह सकता है और साधना ठीक रह सकती है। जिस व्यक्ति के आहार का क्रम संतुलित होता है, घूमने की दिनचर्या होती है उसका शरीर दूसरों की अपेक्षा काफी ठीक रहता है। ऐसे में उसके द्वारा की गई साधना अच्छी मानी जाती है। आदमी के जीवन में किसी तरह की रुकावट न आ जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि उसे प्रेरणा की घुटी दी जाए। हमारा

चलना अहिंसा से युक्त हो और किसी जीव की हत्या हमारे से न हो जाए। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आचार्यश्री ने आज के परिवेश में जीवन विज्ञान की आवश्यकता को महत्ती बताते हुए अभिभावकों से कहा कि वे अपने बालकों को बाल्यावस्था से इस तरह की शिक्षा दें कि युवावस्था में पहुंचते ही संस्कारों से लबरेज हो जाए। बचपन से मिलने वाले संस्कार से बालक का सर्वांगीन विकास होता है। जितने अच्छे उसके संस्कार होंगे। उतनी ही उसकी प्रगति की राह आसान हो जाएगी। जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान और अणुव्रत को एक सागर के रूप में परिभाषित करते हुए कहा कि जीवन विज्ञान के माध्यम से एक अच्छी पीढी का निर्माण किया जा सकता है। यह जीवन जीने की कला सिखाता है। विपरित परिस्थितियों में किस तरह से हालातों का सामना किया जाए। यही जीवन विज्ञान है। इसका लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग को उठाना चाहिए।

### जमीकंद का करें त्याग

आचार्यश्री ने श्रावक-श्राविकाओं से कहा कि वे अहिंसा के मद्देनजर जमीन से पैदा होने वाली सब्जियों और फलों का परित्याग करें। समय-समय पर होने वाले समाज के भोज के दौरान भी इनके उपयोग से बचने का प्रयास करें। मांगलिक कार्यों के आयोजन के दौरान यदि व्यक्ति इन वस्तुओं के परिहार करने का प्रयास करता है तो उसके जीवन में अहिंसा का भाव सदैव बना रहेगा। यह परिवार और समाज के लिए भी अच्छा साबित हो सकता है। व्यवस्थाओं में उचित परिहार करना आज के परिवेश में महत्ती आवश्यकता बन गया है। इस दौरान आचार्यश्री ने ग्रामीणों को नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया और कहा कि नशा करने से वे अपना जीवन को खराब कर ही रहे हैं। साथ ही आने वाली पीढी को भी प्रेरणा देने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। इसे त्यागने से जहां स्वयं का शरीर स्वस्थ होगा वहीं आर्थिक तंगी की समस्या से भी निजात मिल सकेगी। परिवार में कलह और झगडे की स्थितियों में भी कमी आएगी और परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। न-नामुक्ति का वृहद कार्य पूज्यवर के निर्दे-नानुसार अभातेयुप पूरे भारतवर्ष में कर रही है। इस अवसर पर मुनि जितेन्द्रकुमार, अध्यक्ष देवीलाल कोठारी, मंत्री रो-नलाल सूर्या, कोशाध्यक्ष प्रका-न सोनी, चुन्नीलाल कोठारी, मदनलाल सूर्या, राके-न सोनी, बाबूलाल कोठारी, संपत कोठारी, महिला मंडल की पुशपा मेहता, निल्पा सोनी, मीराबाई ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में कोठारी परिवार ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

### एक दिन में 15 किमी

आचार्यश्री ने सुबह आमेट से डेलाणा गांव के लिए विहार किया, जो यहां से सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां कार्यक्रम में निरकत कर आचार्यश्री ने पुनः आमेट की ओर विहार किया।

यानि की एक दिन में 15 किमी का सफर। इस विहार के दौरान उन्होंने रेलवे क्रॉसिंग को भी पार किया। विहार के दौरान मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति आमेट के संयोजक धर्मचंद खाब्या, सह संयोजक सलील लोढा, कोशाध्यक्ष मनसुख गेलडा, ज्ञाने-वर मेहता, दलीचंद कच्छारा, कंवरलाल रांका, आवास व्यवस्था समिति के संयोजक अ-नोक गेलडा, बाबूलाल गांधी, तेरापंथ युवक परिशद के अध्यक्ष प्रवीण ओस्तवाल, महावीर हिरण, संतोश भण्डारी, दीपक कोठारी, संजय बोहरा, संदीप हिंगड, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू गेलडा, मंत्री रेणु छाजेड, कोशाध्यक्ष मीना गेलडा, सदस्य निर्मला मेहता, कन्या मंडल की ममता पीतलिया, स्वीटी दक, खु-नबू गेलडा, तेरापंथी सभा अध्यक्ष कन्हैयालाल कच्छारा, तेजप्रकाश कोठारी, इन्द्रमल गेलडा, -ांतिलाल बाफना सहित बड़ी संख्या में श्रावकों की सहभागिता रही।

आचार्यश्री ने श्रावक-श्राविकाओं से कह